3rd – ग्रेड

अध्यापक

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

भाग - 3

बाल विकास, शिक्षाशास्त्र एवं स्कूल शिक्षा

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	मनोविज्ञान	1
2	बाल विकास का अधिगम या सीखने से संबंध	15
3	बाल विकास के आयाम	18
4	बाल विकास के सिद्धांत	32
5	वंशानुक्रम एव वातावरण का प्रभाव	34
6	व्यक्तित्व	40
7	बुद्धि (Intelligence)	54
8	अधिगम	64
9	अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान	73
10	प्रतिभावान, सृजनात्मक, विशेष क्षमता वाले अधिगमकर्ताओं की पहचान	84
11	अभिप्रेरणा	91
12	समायोजन की संकल्पना एवं तरीके	100
13	सूचना प्रौद्योगिकी के आधार	107
14	सूचना प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग	117
15	सूचना प्रौद्योगिकी में नवीनतम प्रवत्तियाँ	127
16	सूचना प्रौद्योगिकी का सामाजिक प्रभाव	143
17	शिक्षण अधिगम के नवाचार	153
18	विद्यालय प्रबंध समिति	164
19	विद्यालय विकास कोष एव प्रबंध समिति	167
20	राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार	168
21	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) – 2005	178
22	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	181
23	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	192

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार	205
25	राजस्थान के मान्यता प्राप्त निजी विद्यालयों में निशुल्क प्रवेश	209

1 CHAPTER मनोविज्ञान

मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं, अनुभवों तथा व्यक्त व अव्यक्त दोनों प्रकार के व्यवहारों का एक क्रमबद्ध तथा वैज्ञानिक अध्ययन है।

स्कीनर – ''मनोविज्ञान व्यवहार व अनुभव का विज्ञान है।''

गैरीसन – मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है।

मैक्डूगल – ''मनोविज्ञान जीवित वस्तुओं के व्यवहार का विधायक विज्ञान है। व्यवहार शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।'' मैक्डूगल के अनुसार ''मनोविज्ञान, आचरण व व्यवहार का यथार्थ विज्ञान है।''

मनोविज्ञान के लक्ष्य

- मनोविज्ञान मानव एवं पशु के व्यवहार एवं संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

  इसमें मुख्य तीन लक्ष्य हैं–

  1. मापन एवं वर्णन (Measurement and Description)
  2. पूर्वानुमान एवं नियंत्रण (Prediction and Control)
  3. व्याख्या (Explanation)
- मनोविज्ञान का मुख्य लक्ष्य मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं को मापने के लिए परीक्षण या विशेष प्रविधि का विकास करना है। परीक्षण या प्रविधि में ये दो गुण आवश्यक है।

(i) विष्वसनीयता (Reliability)

बार–बार मापने पर भी प्राप्तांक में कोई परिवर्तन नहीं विश्वसनीयता कहलाता है।

(ii) वैद्यता (Validity)

- परीक्षण वहीं माप रहा है जिसे मापने के लिए उसे बनाया गया है।
- मानव व्यवहार की व्याख्या करना मनोविज्ञान का सबसे अव्वल लक्ष्य है क्योंकि जब तक मनोविज्ञान यह नहीं बतला पाता है कि व्यक्ति ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है, तो वे सही ढ़ंग से न तो उस व्यवहार के बारें में पूर्वकथन कर सकते हैं और न ही ठीक ढ़ंग से नियंत्रण कर पाते है।

मनोविज्ञान का इतिहास

- मनोविज्ञान का प्रारम्भ या उद्‌भव व्यक्ति को जानने के लिए हुआ है। इसमें प्राणी जगत् के मन, आत्मा, चेतना से प्रदर्शित व्यवहार एवं क्रियाओं को समझने का प्रयास किया जाता है। शुरू में इसके अध्ययन में मानव एवं पशु दोनों के ही व्यवहार को शामिल किया गया था लेकिन वर्तमान में मनोविज्ञान ने अपना क्षेत्र मनुष्य तक ही सीमित कर लिया है।

नोट– 16वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का दर्शनशास्त्र के रूप में ही अध्ययन किया जाने लगा।

- मनोविज्ञान शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 1590 ई. में रूडोल्फ गोयकर (गोकलेनियस/गॉकेल) ने किया।
- मनोविज्ञान की शुरूआत ग्रीक दार्शनिकों प्लूटो, अरस्तु, सुकरात से मानी जाती है।
- प्लूटो ने (427–347 ई. पू.) आत्मा पर चिन्तन करते हुए इसके महत्व और आत्मसत्ता पर अपने विचार प्रस्तुत किये।
- हिप्पोक्रेटस ने 400 ई.पू. में शरीर गठन प्रकार सिद्धान्त दिया था इससे प्रभावित होकर शैल्डन ने व्यक्तित्व के वर्गीकरण का सोमैटोटाइप (शरीर के विभिन्न शारीरिक आयामों को आधार मानकर उन्हें श्रेणियों में विभक्त करना) सिद्धान्त दिया था।
- ग्रीक दार्शनिक अगस्टाईन तथा थॉमस का विचार था कि मन तथा शरीर दो चीजें हैं तथा इनका आपस में कोई संबंध है।
- देकार्ते व सिपनोजा ने बताया कि मन व शरीर एक–दूसरे से संबंधित है।
- देकार्ते का मत था कि प्रत्येक व्यक्ति में जन्म से ही कुछ विचार होते है।
- जॉन लॉक– व्यक्ति का मस्तिष्क जन्म के समय टेबूला रेसा या "कोरे कागज के समान होता है जिस पर वह अपने अनुभव लिखता है"। इनके अनुसार अनुभव के बिना ज्ञान की कल्पना नहीं की जा सकती।
- मनोविज्ञान में प्रयोगों का जन्म विलियम वुंट से माना जाता है।
- विलियम वुंट ने 1879 ई. में जर्मनी के लिपजिंग शहर में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित की इसलिए इनको प्रायोगिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- **रूसो–** मनुष्य जन्म से अच्छे स्वभाव का होता है परन्तु समाज के कटु अनुभव उसके स्वभाव को बुरा बना देते है।
- **स्पेन्सर** का मत था कि मनुष्य में जन्म से ही स्वार्थता, आक्रमणशीलता आदि मौजूद होते है जो समाज द्वारा नियंत्रित कर दिये जाते हैं।
- जेम्स मिल व जॉन स्टुअर्ट मिल ने 19वीं शताब्दी में दर्शनशास्त्र की विषयवस्तु के रूप में चेतना तथा उनसे उत्पन्न विचारों का अध्ययन किया। इन्होंने साहचर्यवाद की प्रवृति को औपचारिक रूप प्रदान किया।
- विलयम जेम्स, गैरिट, फ्रायड, वाटसन, स्कीनर, वुडवर्थ ने भी मनोविज्ञान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

- अमेरिकी विचारक विलियम जेम्स को आधुनिक मनोविज्ञान का जनक माना जाता है।
- एलेक्सजेंडर कैनन मनोविज्ञान को भारत की देन मानते हैं उन्होंने 1933 में प्रकाशित अपनी पुस्तक "The Invisible Influence" में लिखा है कि मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं के बारें में भारतीय दर्शन, पश्चिम विचारकों से कहीं अधिक ज्ञान देने में सक्षम है।
- भारत में पाश्चात्य मनोविज्ञान के अध्ययन के लिए वर्ष 1916 में डॉ. एन.एन. सेन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला स्थापित की थी।
- भारत में दूसरी प्रयोगशाला की स्थापना डॉ.एम. वी गोपाल स्वामी ने 1924 में मैसूर विश्वविद्यालय में की थी।

मनोविज्ञान

- मनोविज्ञान अंग्रेजी भाषा के समानार्थी शब्द "Psychology" साइकोलॉजी का हिन्दी रूपान्तर है।
- Psychology शब्द ग्रीक/लैटिन भाषा के दो शब्द "Psyche" (साइके) "Logos" (लॉगस) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ निम्न है–

  Psyche – 'आत्मा' (Soul/Spirit)

  Logos – अध्ययन करना (To study)
- साइकोलॉजी का अर्थ आत्मा का अध्ययन करना है।
- **गैरेट–** मनोविज्ञान आत्मा का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।
- मनोविज्ञान शब्द को मन + विज्ञान में विभाजित किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है– मन का विज्ञान।
- मनोविज्ञान मन की वह शाखा है जो मन का अध्ययन करती है।
- क्रो व क्रो के अनुसार, मनोविज्ञान मानव व्यवहार व मानव संबंधों का अध्ययन है।

मनोविज्ञान की अवस्थाएँ

1. **आत्मा का विज्ञान**

- सर्वप्रथम 16 वीं शताब्दी में प्लेटो, अरस्तु, डेकार्टे सुकरात ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान कहा है। समस्त व्यवहार तथा क्रिया का नियंत्रण आत्मा करती है।
- **आत्मा क्या है, आत्मा का रंग, रूप, आकार कैसा है ?** आत्मा की व्याख्या, इसका अस्तित्व एवं प्रमाणिकता का उत्तर न दे पाने के कारण 16वीं शताब्दी में मनोविज्ञान का यह अर्थ अस्वीकार कर दिया गया।
- डेकार्टे ने बताया कि आत्मा केवल मनुष्यों में पायी जाती है।

नोट– फ्रांस के "रेन डेस्कोर्ट" पहले दार्शनिक थे जिन्होंने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानने से मना कर दिया था।

2. **मन या मस्तिष्क का विज्ञान –** जीव के समस्त व्यवहार तथा क्रियाओं का नियंत्रण मन/मस्तिष्क के द्वारा होता है।

   17वीं शताब्दी में इटली के **पॉम्पोनॉजी** व सहयोगी **थॉमस रीड** व **टीचनर** ने मनोविज्ञान को मन या मस्तिष्क का विज्ञान कहा है।

- **बी.एन.झा–** मस्तिष्क के स्वरूप के अनिश्चित रह जाने के कारण मनोविज्ञान ने मस्तिष्क के विज्ञान के रूप में किसी प्रकार की प्रगति नहीं की।
- आधुनिक मनोविज्ञान मन के स्वरूप तथा प्रकृति का निर्धारण न कर सका। मन शब्द के विषय में भी अनेक मतभेद है, अतः यह परिभाषा अस्वीकार कर दी गई।
- व्यक्ति के मन व मस्तिष्क का संबंध विवेक व विचारशील निर्णयों से है। पागलों व पशुओं में इसका अभाव पाया जाता है।

  इस विचारधारा पर भी यह मत अस्वीकार कर दिया गया।

3. **चेतना का विज्ञान – मनोविज्ञान चेतन क्रियाओं का अध्ययन करता है**

- 19 वीं शताब्दी में **विलियम वुण्ट, विलियम जेम्स, जेम्स सली** आदि के द्वारा मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा है जिसके अनुसार मनुष्य की चेतन अवस्था मनुष्य की समस्त क्रिया व्यवहार को नियन्त्रित करती है।
- विलयम जेम्स ने 1890 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **"Principles of Psychology"** में इसका बहुत प्रचार किया।
- 1879 ई. में मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र से अलग होकर एक स्वतंत्र विषय के रूप में स्थापित हो गया।
- व्यक्ति के मस्तिष्क में चेतना के तीन स्तर होते हैं–

  1. चेतन 2. अर्द्धचेतन 3. अचेतन
- इस मत को मानने वाले मनोवैज्ञानिक केवल चेतन मन का ही अध्ययन करते है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिग्मड फ्रायड ने बताया कि व्यक्ति के व्यवहार पर अर्द्धचेतन मन और अचेतन मन का भी प्रभाव पड़ता है।
- व्यक्ति में चेतन मन केवल 1/10 भाग, अर्द्धचेतन, अचेतन 9/10 भाग पाया जाता है।
- चेतन एक स्थूल वस्तु ना होकर मात्र अनुभूति है जिसका प्रत्यक्षण संभव नहीं है। चेतना का प्रयोग विधि से निरीक्षण भी संभव नहीं है। इन्हीं कारणों से यह परिभाषा सर्वमान्य नहीं हो पायी।
- विलियम मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक आउटलाईन ऑफ साइकोलॉजी में चेतना शब्द की आलोचना की। जिसके अनुसार ''चेतना बहुत बुरा शब्द है।'' जिसका मनोविज्ञान में प्रयोग दुर्भाग्य की बात है।

4. **व्यवहार का विज्ञान – वर्तमान समय में मनोविज्ञान की इस शाखा को सर्वमान्य माना है**

- 20 वीं शताब्दी में मनोवैज्ञानिक वाटसन, वुडवर्थ, स्किनर, मैक्डूगल, थार्नडाइक ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहा है।
- विलियम मैक्डूगल अपनी पुस्तक **"An Out Line of Psychology"** में मनोविज्ञान को आचरण एवं व्यवहार का विधेयक विज्ञान मानते हुए इसे ज्ञान, भावना, क्रिया के रूप में बाँटा है।
- व्यवहार में मानव व्यवहार व पशु व्यवहार दोनों ही सम्मिलित होते हैं। वर्तमान में मनोविज्ञान के इसी अर्थ को सर्वमान्य अर्थ के रूप में स्वीकार किया गया है।
- **वाटसन**– मनोविज्ञान व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।

नोट– मनोविज्ञान के बदलते स्वरूप को देखकर वुडवर्थ ने लिखा है–

"सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा को छोड़ा/त्यागा, फिर उसने अपने मन व मस्तिष्क का त्याग किया, फिर उसने अपनी चेतना को खोया व वर्तमान में मनोविज्ञान व्यवहार के विधि स्वरूप को स्वीकार करता है।"

मनोविज्ञान की परिभाषाएँ

- **क्रो एण्ड क्रो**– "मनोविज्ञान को मानवीय व्यवहार और मानव संबंधों का अध्ययन कहा है।" यह व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के अनुभवों का वर्णन व व्याख्या करता है।
- **पिल्सबरी–** "मनोविज्ञान की सबसे संतोषजनक परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।"
- **वुडवर्थ** – "मनोविज्ञान व्यक्ति के पर्यावरण के संबंध में व्यक्ति की क्रियाओं का विज्ञान है।"
- **मैक्डूगल**– "मनोविज्ञान व्यवहार व आचरण का विज्ञान है।"
- **गार्डनर मर्फी–** "मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें जीवित प्राणियों के उन प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है जिनको हम वातावरण के प्रति तैयार करते है।"
- **वाटसन–** "मनोविज्ञान व्यवहार का शुद्ध, निश्चित, सकारात्मक, धनात्मक विज्ञान है।"
- **वाटसन का कथन** – **"तुम मुझे एक बालक दो मै उसे वो बना सकता हूँ जो मैं बनाना चाहता हूँ।"**

स्किनर

(i) मनोविज्ञान व्यवहार व अनुभव का विज्ञान है।

(ii) शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापकों की तैयारी की आधारशीला है।

N.L. मन के अनुसार

(i) आधुनिक मनोविज्ञान का संबंध व्यवहार की वैज्ञानिक खोज से है।

(ii) चेतन का संबंध अनुभव के विज्ञान तथा ज्ञान का संबंध व्यवहार से होता है।

जे.एस.रॉस – "मनोविज्ञान मानसिक पृष्ठभूमि में व्यवहार का स्पष्टीकरण है।"

जेम्स ड्रेवर – "मनोविज्ञान जीवित प्राणियों के व्यवहारों को मानसिक भाषा में स्पष्ट करता है।"

बोरिंग, लैगफैल्ड, वेल्ड – "मनोविज्ञान मानव प्रकृति का अध्ययन है।"

कालसनिक – "मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है।" मनोविज्ञान के सिद्धांतो व परिणामों का शिक्षा के क्षेत्र में अनुप्रयोग है। शिक्षा मनोविज्ञान है।

गैरिसन व अन्य – "मनोविज्ञान का संबंध प्रत्यक्ष मानव व्यवहार से है।"

शिक्षा मनोविज्ञान

- शिक्षा शब्द की उत्पत्ति **शिक्ष् धातु** से हुई है जिसका अर्थ है सीखना।
- शिक्षा में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का सूत्रपात रूसो ने किया।
- रूसों ने अपनी **पुस्तक इमाईल** में लिखा है – शिक्षा संस्कृत के शिक्ष् धातु से बना है।
- शिक्षा या एजुकेशन शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के **एडुकेटम** से हुई है।

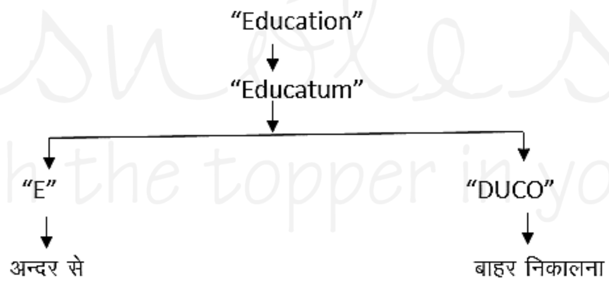

- Education शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के दो अन्य शब्दों से भी मानी जाती है।

  (i) Educare – अर्थ – आगे बढ़ाना या विकसित करना।

  (ii) Educere – अर्थ – बाहर की ओर अग्रसर करना।

वास्तविक अर्थ – गुरू द्वारा अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना। अंधकार का परिमार्जन करना। **(CTET2013) (RTET)**

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

1. शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक है।
2. इसमें नियम व सिद्धान्त का प्रयोग किया जाता है जो कि सार्वभौमिक होते हैं।

3. शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।
4. शिक्षा मनोविज्ञान एक सकारात्मक विज्ञान है।
5. यह छात्रों की उपलब्धियों के संबंध में भविष्यवाणी करता है।
6. शिक्षा मनोविज्ञान विशुद्ध विज्ञान है। (**HTET-2011**)

नोट– जॉन एडम्स ने सीखने के दो तत्वों को अनिवार्य माना है।

1. शिक्षक   2. छात्र

- **जॉन डी वी** ने सीखने के तीन तत्त्वों को मान्यता दी है।

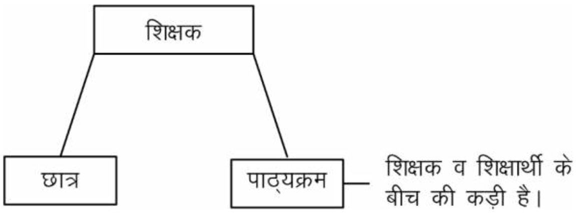

- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति – 1900 ई. में हुई।
- वास्तविक स्वरूप में 1920 में प्रारम्भ हुआ। (**BTET-2011**)
- कोलसेनिक ने शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ प्लेटो से माना है।
- स्किनर ने शिक्षा मनोविज्ञान का आरम्भ अरस्तु से माना है।
- शिक्षा मनोविज्ञान की औपचारिक आधारशिला स्टेनले हॉल ने 1889 ई. में रखी।
- थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।
- **स्किनर**– मनोविज्ञान शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है। (**BTET-2011**)
- **क्रो एण्ड क्रो**– शिक्षा मनोविज्ञान जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।
- **फ्रोबेल**– शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक बालक अपनी जन्मजात शक्तियों का विकास करता है।
- **सारे व टेलफोर्ड–** शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य संबंध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है, जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक खोज से संबंधित है।
- **रूसो–** बालक एक पुस्तक के समान है जिसका अध्ययन प्रत्येक अध्यापक को करना चाहिए।
- **स्टीफन– शिक्षा मनोविज्ञान, शैक्षिक मनोविज्ञान का क्रमबद्ध अध्ययन है।**

शिक्षा के प्रकार

शिक्षा मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं –

(1) **औपचारिक शिक्षा** – यह शिक्षा निर्धारित समय व स्थान पर प्राप्त की जाती है। जैसे– विद्यालय।

(2) **अनौपचारिक शिक्षा** – अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का समय व स्थान निर्धारित नहीं होता है। जैसे – परिवार। **[U.P. TET - 2011] [CTET-2019]**

(3) **निरौपचारिक शिक्षा** – दूरस्थ स्थान से प्राप्त शिक्षा। जैसे – टी.वी, समाचार पत्र, खुला विश्वविद्यालय।

- शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा के सर्वोत्तम अंश की अभिव्यक्ति है– महात्मा गाँधी।
- आधुनिक शिक्षा का संबंध व्यक्ति व समाज दोनो में कल्याण से है – **फ्रैडसन**।
- शिक्षा व्यक्तिकरण व समाजीकरण की प्रक्रिया है जो व्यक्ति को व्यक्तिगत उन्नति व समाज की उपयोगिता को बढ़ावा देती है – **क्रो एण्ड क्रो**।

शिक्षा को 3R भी कहा जाता है

1. पढ़ना – Reading
2. लिखना – Writing
3. गणना करना – Arithmatic

गाँधीजी ने शिक्षा को 4H से नामांकित किया है।

1. Hand – क्रियात्मकता
2. Head – मानसिकता
3. Health – शारीरिकता
4. Heart – भावात्मकता

- जॉन डीवी प्रथम शिक्षाविद् थे।

शिक्षा मनोविज्ञान की शाखाएँ

1. सामान्य मनोविज्ञान
2. असामान्य मनोविज्ञान
3. मानव मनोविज्ञान
4. पशु मनोविज्ञान
5. व्यक्तिक मनोविज्ञान
6. समूह मनोविज्ञान
7. प्रौढ़ मनोविज्ञान
8. शिक्षा मनोविज्ञान
9. शुद्ध मनोविज्ञान
10. व्यावहारिक मनोविज्ञान
11. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
12. विकासात्मक मनोविज्ञान
13. पर्यावरणीय मनोविज्ञान
14. पैरा मनोविज्ञान
15. औद्योगिक मनोविज्ञान
16. नैदानिक मनोविज्ञान
17. समाज मनोविज्ञान
18. अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान
19. मनौभौतिकी मनोविज्ञान
20. आर्थिक मनोविज्ञान
21. स्वास्थ्य मनोविज्ञान
22. बाल मनोविज्ञान
23. दैहिक मनोविज्ञान
24. आपराधिक मनोविज्ञान
25. परामर्श मनोविज्ञान
26. संगठनात्मक मनोविज्ञान

शिक्षा मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

स्टीफन – ''शिक्षा मनोविज्ञान, शैक्षिक विकास का क्रमबद्ध अध्ययन है।''

कोलसेनिक– ''मनोविज्ञान के अनुसंधानों एवं सिद्धान्तों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग ही शिक्षा मनोविज्ञान है।''

स्किनर– ''शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन है।''

सी.एच. जड़– ''जन्म से लेकर परिपक्वावस्था तक के विकास क्रम में प्राणी के व्यवहार में जो परिवर्तन आते हैं इनकी व्याख्या तथा विवेचन करने वाले विज्ञान को शिक्षा मनोविज्ञान कहते है।''

"मारिया माण्टेसरी"– "शिक्षको को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जितना अधिक ज्ञान होता है, उतना ही अधिक वह जानता है कि कैसे पढ़ाया जाए।"

एलिस क्रो– "शिक्षकों को अपने शिक्षण में उन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए जो सफल शिक्षण और प्रभावशाली अधिगम के लिए अनिवार्य है" तथा इनसे शिक्षण व अधिगम दोनों प्रभावित होते हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र

शिक्षा मनोविज्ञान में निम्नांकित बातों का अध्ययन किया जाता है।

1. शिक्षा के समस्याओं का अध्ययन।
2. पाठ्यक्रम–निर्माण से संबंधित अध्ययन।
3. शिक्षण विधियों की उपयोगिता और अनुपयोगिता का अध्ययन।
4. बालक के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन।
5. बालक के रूचियों और अरूचियों का अध्ययन।
6. बालक की प्रेरणा और मूल–प्रवृत्तियों का अध्ययन।
7. मानसिक रोगों से ग्रस्त, असाधारण, अपराधी बालकों का अध्ययन।
8. बालक के वंशानुक्रम व वातावरण का अध्ययन।
9. बालक की विशेष योग्यताओं का अध्ययन, शिक्षा समस्या का अध्ययन।
10. अनुशासन संबंधी समस्याओं का अध्ययन।
11. बालक के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सामाजिक, सौन्दार्यात्मक, संवेगात्मक विकास का अध्ययन।
12. बालक की व्यक्तिगत् विभिन्नता, सीखने की क्रियाओं का अध्ययन।

शिक्षा मनोविज्ञान के संप्रदाय

1. संरचनावाद (1892)

अन्य नाम – अन्त निरीक्षणवाद, अस्तित्व वाद।

- संरचनावाद को **विलियम वुण्ट** के शिष्य **टिचनर** द्वारा अमेरिका के कार्नेल विश्वविद्यालय से 1892 ई. में प्रारम्भ किया था।
- संरचनावाद के मूल प्रवर्तक विलियम वुण्ट ही थे जिन्होंने मनोविज्ञान को 1879 में स्वतंत्र विषय के रूप में दर्जा दिलवाया।
- सरंचनावाद के अनुसार मनोविज्ञान की विषय–वस्तु या मुख्य प्रकरण संवेदना यानि चेतन अनुभूति थी।
- टिचनर के अनुसार चेतना के तीन तत्व होते हैं–
  (i) भाव या अनुराग (ii) संवेदन (iii) प्रतिमा या प्रतिबिम्ब
- टिचनर ने अन्तः निरीक्षण विधि को मनोविज्ञान की प्रमुख विधि माना है।
- वुण्ट ने संवेदना को रंग, स्वाद, स्वर के रूप में विभाजित किया है।
- वुण्ट ने भाव को तीन युग्मों उत्तेजना–शांत, तनाव–शिथिलन, सुखद–दुःखद में बाँटा है। इसे भाव का त्रिविमीय सिद्धांत भी कहा जाता है।
- टिचनर के अनुसार मन और चेतना दोनों ही मनुष्य के अनुभव है जिनका आधार स्नायुमण्डल है।
- यह संप्रदाय समूह संरचना के माध्यम से अध्ययन करने पर बल देता है।
- वुण्ट के अनुसार चेतना की दो विशेषताएँ थी – गुण व तीव्रता। टिचनर ने इनकी संख्या चार बताई – गुण, तीव्रता, स्पष्टता व अवधि।

2. प्रकार्यवाद / कार्यात्मक वाद / कार्यवाद

स्थापना– प्राकार्यवाद की अनौपचारिक रूप से स्थापना विलियम जेम्स ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में की, जिसकी अवधारणा उन्होंने अपनी पुस्तक –

"Principles of Psychology" में 1890 ई. में दी थी। **[R.H.A. पेज नम्बर 6]**

- विलियम जेम्स ने कैम्ब्रिज में मनोविज्ञान की प्रयोगशाला स्थापित की थी।
- प्रकार्यवाद के **वास्तविक संस्थापक– जॉन डीवी, एंजिल, हार्वेष्कार थे जिन्होंने 1894 ई. में प्रकार्यवाद की स्थापना शिकागो विश्वविद्यालय में की थी।**
- प्रकार्यवाद के अनुसार मनोविज्ञान का संबंध मानसिक प्रक्रियाओं या कार्य के अध्ययन से होता है, न कि चेतना के तत्त्वों के अध्ययन से।
- मानव मस्तिष्क कैसे कार्य करता है इसका अध्ययन प्रकार्यवाद में किया जाता है।
- विलियम जेम्स ने मन के अध्ययन में जीव विज्ञान की प्रकृति को अपनाया था अथवा जीव विज्ञान व मनोविज्ञान में संबंध स्थापित किया था।
- इस संप्रदाय का जन्म संरचनावाद के वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक उपागम के विरोध में हुआ था।
- प्रकार्यवाद ने शिक्षा एवं मनोविज्ञान में व्यक्तिनिष्ठता को समाप्त कर वस्तुनिष्ठता को स्थापित करने का प्रयास किया।
- यह सम्प्रदाय मनुष्य के व्यवहार को उसके मन एवं शरीर के मध्य अन्तः क्रिया का परिणाम मानता है।
- प्रकार्यात्मक वाद का आधार उपयोगिता है अतः यह सम्प्रदाय मनोविज्ञान में पाठ्यक्रम की विषय वस्तु की उपयोगिता पर बल देता है।

प्रकार्यवाद के तीन उपसम्प्रदाय है –

(a) शिकागो सम्प्रदाय – इसके प्रमुख विद्वान– जॉन डीवी, जेम्स एंजेल, हार्वेश्कार मुख्य है।

(i) शिकागो सम्प्रदाय ने मानव व्यवहार को समझाने के लिए संपूर्णता अथवा महायोग की संपूर्णता पर बल दिया है।

(ii) इन मनोवैज्ञानिकों ने टिचनर के द्वारा चेतना के क्रियात्मक पक्ष की उपेक्षा की निंदा करते हुए चेतना के तत्वों को खोजना व्यर्थ माना है।

(b) कोलंबिया संप्रदाय – विद्वान– थॉर्नडाइक, केटल, रॉबर्ट एडवर्ड है।

(i) कोलंबिया संप्रदाय के मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की प्रक्रिया में वातावरण की महत्ता पर बल दिया है।

(c) यूरोपीय संप्रदाय– विद्वान– एडगर रूबीन, डेविड कॉटज है।

(i) इन मनोवैज्ञानिको के अनुसार कार्यात्मकता शारीरिक घटकों पर मुख्य रूप से विचार करती है।

- प्रकार्यवाद को थॉर्नडाइक व वुडवर्थ ने आगे बढ़ाया था।
- **जॉन डीवी** ने प्रकार्यवाद के संबंध में अपने विचार पुस्तक "Text Book of Psychology" में रखे है।
- बाल मनोविज्ञान, व्यक्तिगत् विभिन्नता, बुद्धि परीक्षण आदि उपागमों को सर्वप्रथम प्रस्तुत करने का श्रेय प्रकार्यवाद संप्रदाय को जाता है।

3. व्यवहारवाद

- स्थापना – जे.बी. वाटसन द्वारा 1913 ई. में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में की गई थी।
- प्रमुख व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक – वाटसन, स्किनर, वुडवर्थ, टॉलमेन है।
- व्यवहारवाद संबोध, प्रयोग एवं दर्शन पर बल देता है।
- व्यवहारवाद, उद्दीपन और अनुक्रिया पर आधारित है इसलिए इसे उद्दीपन–अनुक्रिया सिद्धांत कहते है।
- वाटसन का कहना था कि मनोविज्ञान एक वस्तुनिष्ठ तथा प्रयोगात्मक मनोविज्ञान है अतः मनोविज्ञान की विषय–वस्तु सिर्फ व्यवहार हो सकता है, चेतना नहीं, क्योंकि केवल व्यवहार का ही अध्ययन वस्तुनिष्ठ एवं प्रयोगात्मक ढ़ंग से किया जा सकता है।
- व्यवहारवाद ने अन्तर्दर्शन विधि का परित्याग कर प्रयोगात्मक विधि को स्वीकार करता है।
- यह संप्रदाय मनोविज्ञान का ध्यान चेतना और आत्मा से हटाकर मनुष्य के व्यवहार पर केन्द्रित करता है।
- व्यवहारवाद के अनुसार नियंत्रण परिस्थितियो में विशेष प्रशिक्षण द्वारा बालक को कुछ भी सिखाया जा सकता है।
- वाटसन चेतना एवं व्यवहार को परस्पर विरोधी प्रत्यय मानते है।
- वाटसन ने मानव व्यवहार को समझने से पूर्व पशु मनोविज्ञान का पक्ष लिया क्योंकि उनके व्यवहार में जटिलता का अभाव पाया जाता है।
- व्यवहार का अध्ययन करने के लिए वाटसन ने वस्तुनिष्ठ पद्धति को स्वीकार किया है।
- व्यवहारवाद के अनुसार व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए व्यवहार की सबसे छोटी इकाई सहज क्रिया को जानना आवश्यक है।
- वाटसन के अनुसार अच्छे वातावरण में किसी भी बालक की क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।
  वाटसन का कथन – "तुम मुझे कोई भी सामान्य बालक दे दो, उसे मैं जैसा चाहूँ वैसा बना सकता हूँ"।
- टॉलमेन ने भी सीखने में उद्दीपक अनुक्रिया पर बल दिया है।
- क्लार्क एल. हल ने भी टॉलमेन के व्यवहारवाद का समर्थन किया। हल की रूचि सांख्यिकी पद्धति में अधिक थी।
- स्कीनर ने पुनर्बलन के आधार पर सीखने पर जोर दिया वहीं पावलाव ने सहज क्रिया के माध्यम से व्यवहारवाद को समझाने का प्रयास किया।
- कानलैस व स्पीकर ने नवव्यवहारवाद दर्शन की व्याख्या की।
- नवव्यवहारवाद अधिगम के उन सिद्धांतों का समर्थन करते है जो बालकों में विभेदीकरण एवं सामान्यीकरण की क्षमता उत्पन्न करते है।
- गथरी के अनुसार व्यक्ति किसी सरल, अनुक्रिया को एक ही बार में बिना अभ्यास के सीख लेता है। जटिल कामों के लिए अभ्यास जरूरी होता है।

4. गैस्टाल्ट वाद/समग्रवाद

- **स्थापना** – मैक्स वर्दीमर द्वारा, (1912), जर्मनी में।
  सहसंस्थापक – कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर
- गैस्टाल्ट वाद जर्मन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है–आकृति/समाकृति, पूर्णाकार/संपूर्णाकार।
- गैस्टाल्ट संप्रदाय का मानना था कि मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का अध्ययन है। इसके अन्तर्गत प्रत्याक्षिक अनुभवों के संगठन को महत्वपूर्ण माना गया है, इसके अनुसार किसी भी विषय–वस्तु को मानव मस्तिष्क समग्र रूप में देखता है।
- पूर्ण से अंश की ओर अध्ययन की विधि इसी संप्रदाय की देन है।
- गैस्टाल्टवाद ने प्राचीन मनोविज्ञान विशेषकर विलियम वुण्ट का सबसे अधिक विरोध किया। प्राचीन मनोविज्ञान में वे मानसिक प्रक्रिया के मूल तत्वों का विश्लेषण कर उनमें अन्तः संबंध स्थापित करना चाहते थे। जबकि गैस्टाल्टवाद अवयवों की पूर्णता पर बल देता है।
- गैस्टाल्टवाद संप्रदाय को कोहलर के चिंपाजी पर किये गये अध्ययन से और अधिक बल मिला।

- कोहलर ने बताया कि प्राणी केवल प्रयत्न व भूल से ही नहीं बल्कि सूझ से सीखता है।
- गैसटाल्टवाद के अनुसार मनोविज्ञान का अध्ययन व्यवहार अनुभव पर आधारित है। इस संप्रदाय के अनुसार कोई वस्तु या समस्या को समग्र रूप में देखकर अंशों में हल किया जा सकता है।
- गैस्टाल्टवाद के अनुसार उद्दीपक एवं अनुक्रिया से नहीं सीखकर सूझ या अन्तर्दृष्टि से सीखता है।
- गैस्टाल्टवादियों ने सूझ के निर्माण में कुछ नियमों का प्रतिपादन किया। ये नियम निम्न हैं–
  - **(a) समानता का नियम**– समानगुण वाले अंश एक साथ मिलकर संगठन का निर्माण करते हैं।
  - **(b) समीपता का नियम**– एक समान तत्वों में समीप रहने की प्रवृत्ति पाई जाती है जिसका प्रत्यक्षीकरण समग्रता के रूप में होता है।
  - **(c) समग्रता का नियम**– संपूर्णता में सभी अंश नियमानुसार निश्चित अनुपात व क्रम में जुड़े रहते हैं।
  - **(d) सजातीयता का नियम**– एक समान तीव्रता एवं गति वाले अंश भी परस्पर मिलकर संगठन का प्रत्यक्षीकरण करते है।
  - **(e) निरन्तरता का नियम**– एक समान गुणों वाले अवयवों से निरन्तर रहने का भाव पाया जाता है।
- गैस्टाल्टवाद ने शिक्षा के उद्देश्य को केवल ज्ञान तक सीमित न रखकर जीवन का संपूर्ण विकास माना है। गैस्टाल्टवाद संश्लेषण, विश्लेषण के बाद सामान्यीकरण पर बल देता है जो बालको को नियम एवं सिद्धांतों को सीखने में मदद करता है।

5. मनोविश्लेषण वाद

स्थापना – सिग्मण्ड फ्रायड ने 1900 ई. में वियना में की।

समर्थक – जुंग, एडलर है।

- फ्रायड ने मानसिक रोगों की चिकित्सा में मनोविश्लेषण वादी पद्धतियों को खोजा अतः मनोविश्लेषण का प्रादुर्भाव चिकित्सा विज्ञान से माना जाता है।
- फ्रायड व्यक्ति के व्यवहार को संचालित करने के लिए मूल प्रवृत्तियों को जिम्मेदार कारक मानता है।
- मूल प्रवृत्तियों मे निम्न चार विशेषताएँ पायी जाती हैं–

  1 उद्देश्य (Aim) 2. दबाव (Pressure)

  3. आधार (Source) 4. पदार्थ (Object)
- फ्रायड ने दो प्रकार की मूल प्रवृत्ति बताई–
  - **(i) जीवन मूल प्रवृत्ति** – ये शक्तियाँ व्यक्ति को जीवन शक्ति प्रदान करती है। जैसे – भूख, प्यास, काम इत्यादि।
  - **(ii) मृत्यु मूल प्रवृत्ति** – ये जीवन मूल प्रवृत्ति के विपरीत कार्य करती है। जैसे – क्रोध, आलोचना, विध्वंसक व्यवहार।
- फ्रायड ने मन को तीन भागों में विभाजित किया हैं –
  - **(i) चेतन मन** – यह जागृत अवस्था है जो व्यक्ति के चेतन जीवन को नियंत्रित करता है। चेतन मन की क्रियाओं को हम शीघ्रता से प्रत्यास्मरण कर सकते है।
  - **(ii)** मानव मस्तिष्क का केवल दसवाँ भाग (1/10) ही चेतन अवस्था में रहता है।
  - **(iii) अर्द्धचेतन मन** – इस मन की ज्यादातर विशेषताएँ चेतन मन से मिलती है। यह चेतन और अचेतन मन के बीच की अवस्था है।
  - **(iv) अचेतन मन** – यह हमारे मन का बहुत बडा भाग है, इसमें व्यक्ति की दमित इच्छाओं का भण्डार होता है।
- अचेतन मन की विषय सामग्री की न तो हमें जानकारी होती है, और न ही उस पर प्रत्यक्ष नियंत्रण।
- मानव मस्तिष्क का 9/10 भाग अचेतन अवस्था में रहता है।
- फ्रायड ने मन के तीनों भागों में से अचेतन मन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना है।

6. सहचार्यवाद

स्थापना – जॉन लॉक द्वारा

सहयोगी – बर्कले

- इसके अनुसार जब मस्तिष्क में उत्तेजनाएँ पहुँचती है तो उनके स्पंदन आपस में इस प्रकार मिश्रित हो जाते है कि वे एक दूसरे का पूरक बन जाते है।

7. प्रयोजनवाद संप्रदाय

उपनाम – प्रेरक संप्रदाय, करणीयतावादी संप्रदाय, हार्मिक संप्रदाय

प्रवर्तक – विलियम मैक्डूगल

- प्रयोजनवाद के अनुसार प्राणी के प्रत्येक व्यवहार के पीछे कोई–न–कोई उद्देश्य अवश्य होता है।
- व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यवहार करता है। व्यवहार के लिए क्रियाओं का होना आवश्यक है।
- **क्रिया के मैक्डूगल ने चार लक्षण बताये हैं –**
  - (i) उद्दीपक से प्रारम्भ क्रिया उसकी अनुपस्थिति में भी आगे जारी रहती है अर्थात् व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति हो जाने के बाद भी क्रियाशील रहता है, इसकी व्याख्या मैक्डूगल ने अपनी पुस्तक **"Introduction to Social Psychology"** में 1912 ई. में किया।
  - (ii) क्रिया बदल सकती है परन्तु लक्ष्य वहीं रहता है।
  - (iii) लक्ष्य प्राप्ति के बाद क्रिया समाप्त हो जाती है।
  - (iv) आवृत्ति के बढ़ने से क्रिया में सुधार हो जाता है और लक्ष्य की प्राप्ति में साधक सुदृढ़ हो जाते है।

निर्मितवाद / रचनावाद संप्रदाय

- संस्थापक – जेरोम ब्रूनर है।
- निर्मितवाद एक नवीन उपागम है जिसमें छात्र अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर ज्ञान अर्जित करते हैं।
- यह संरचनावाद का ही एक नवीन प्रतिरूप है। इसमें बालक ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से पूर्व में प्राप्त अनुभव को अपने आधार पर अर्थ प्रदान करता है, फिर उस पर चिन्तन करके उसे संरचित करता है।
- निर्मितवाद का विकास प्रतिमूलक शिक्षा के फलस्वरूप हुआ है। जिसके समर्थक जीन पियाजे व जॉन डी.वी. है।
- जॉन डी.वी. के अनुसार व्यक्ति सामाजिक प्रक्रिया में भाग लेकर सीखता है व दूसरा किसी प्रकार की समस्या के उत्पन्न होने पर उसके समाधान के लिए ज्ञान की खोज करता है।
- जॉन डी.वी. के शिष्य किलपैट्रिक ने सीखने के लिए सामूहिक क्रियाओं को अधिक महत्व दिया है, और इस आधार पर सीखने के लिए योजना विधि (Project Method) का आविष्कार किया।
- वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में निर्मितवाद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 की देन है।
- टॉलमैन व हार्डी ने निर्मितवाद के लिए पाँच तत्वों को जरूरी माना है।

  (i) पूर्व ज्ञान को जागृत करना।

  (ii) नये ज्ञान को प्राप्त करना।

  (iii) नये ज्ञान को समझना।

  (iv) नये ज्ञान का प्रयोग करना।

  (v) नये ज्ञान का प्रतिक्षेपन करना।

निर्मितवाद की विशेषताएँ

1. निर्मितवाद में व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर स्वयं करके सीखता है।
2. निर्मितवाद छात्र को अधिक महत्व देता है जो गलतियाँ करके सीखता है।
3. यह एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों प्रकार की प्रक्रिया है।
4. यह सिद्धांत ज्ञान की क्रमबद्धता एवं उसके पुनर्गठन पर बल देता है।
5. निर्मितवाद में क्रिया व चिन्तन साथ–साथ चलते हैं।

मानवतावादी संप्रदाय

- प्रतिपादक – अब्राहम मास्लो व रोजर्स।
- यह संप्रदाय मनोविश्लेषण सिद्धांत एवं व्यवहारवाद के जवाब में सामने आया।
- मास्लो ने व्यवहारवादियों द्वारा मनुष्य के व्यवहार को जानने के लिए पशुओं पर किये जाने वाले प्रयोगों का विरोध करते हुए बताया कि पशुओं का व्यवहार मानव व्यवहार से बहुत भिन्न होता है।
- मास्लो ने अभिप्रेरणा के पदानुक्रम सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए बताया है कि अभिप्रेरणा समग्र रूप से मनुष्य को प्रभावित करती है।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान

- प्रतिपादक – कार्ल सी. युंग।
- कार्ल सी. युंग ने व्यक्ति की अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी शक्तियों का वर्गीकरण किया।
- युंग ने अहम् (Ego) को चेतन माना है।

समाज शास्त्रीय संप्रदाय – केरोन हॉर्नी, सुल्लीवान, एरिक फ्रोम।

वैयक्तिक संप्रदाय

- स्थापना – अलफ्रेड एडलर
- एडलर ने मनोविश्लेषण वादियों के विरोध में इस संप्रदाय की अपनी पुस्तक **"The Neurotic Constitutions"** में रचना की है।
- एडलर के अनुसार व्यक्ति में सामाजिक रूचि जन्मजात होती है। इसलिए मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के तत्व / अवयव

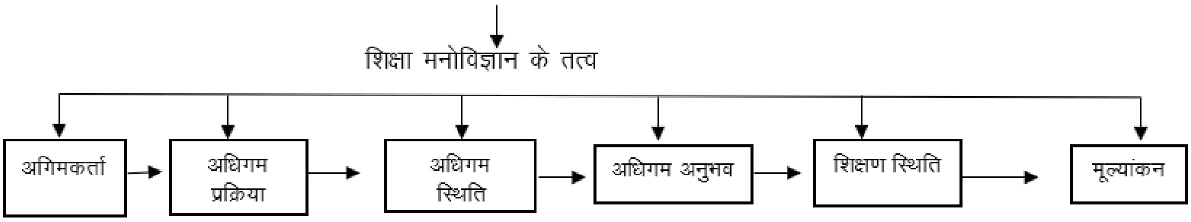

शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ

शिक्षा मनोविज्ञान में अध्ययन और अनुसंधान के लिए सामान्य रूप प्रयोग में आने वाली विधियों को दो भागों में बाँटा गया हैं–

(i) आत्मनिष्ठ विधियाँ **(ii) वस्तुनिष्ठ विधियाँ**

(i) आत्म निरीक्षण विधि / अन्तः दर्शन प्रणाली

अर्थ – अपने आप में देखना या आत्म निरीक्षण / स्वयं का अवलोकन स्वयं द्वारा करना।

- इस विधि का संबंध इंग्लैण्ड के दार्शनिक जॉन लॉक से है, परन्तु वास्तविक संस्थापक विलियम वुण्ट व टिचनर है।
  जॉन लॉक – मस्तिष्क द्वारा अपनी स्वयं की क्रियाओं का निरीक्षण ही आत्म निरीक्षण है।
  टिचनर – अपने आप में देखना ही आत्मदर्शन है।
- यह मनोविज्ञान की प्राचीन विधि है, इसमें प्रयोज्य व प्रयोगकर्ता एक ही व्यक्ति होता है। यह विधि विषयी प्रधान है।
- इस विधि में यंत्र व प्रयोगशाला की आश्यकता नहीं होती है, अतः अवैज्ञानिक विधि है।
- इस विधि में मस्तिष्क का वास्तविक दशा का ज्ञान नहीं हो पाता।
- यह विधि विश्वसनीय व वैद्य नहीं है। यह बच्चों, पशुओं, असामान्य बालकों पर लागू नहीं होती है।

गाथा वर्णन विधि

- गाथा वर्णन विधि में व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव व व्यवहार के आधार पर जीवनगाथा को लिखता है।
  स्कीनर– आत्मनिष्ठता के कारण गाथाविधि के परिणाम पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।
- इस विधि में व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव या व्यवहार को ठीक से पुनः याद नही कर पाता है, कुछ बातें भूल जाता है, कुछ अपनी ओर से जोड़ देता है। अतः यह विधि विश्वसनीय नहीं है।

(ii) वस्तुनिष्ठ विधियाँ

1. बहिः दर्शन

- **प्रतिपादक** – वाटसन
- अन्य नाम – अवलोकन विधि, परीक्षण विधि, निरीक्षण विधि **[BTET-2013]**
- किसी अन्य व्यक्ति का अवलोकन करके उसके व्यवहार को जानना बहिःदर्शन कहलाता है।
- इस विधि में अध्ययनकर्ता प्राणी या जीव के व्यवहारों को निष्पक्ष भाव से प्रक्षेपण या अवलोकन करता है व उसके आधार पर यह एक रिपोर्ट तैयार करता है। इस रिपोर्ट का विश्लेषण कर वह प्राणी के व्यवहार के बारें में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है।
- प्रेक्षण को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिए प्राणी के व्यवहारों का अवलोकन कर भिन्न–2 परिस्थितियों में करता है। कई प्रेक्षक मिलकर प्राणी या जीव के व्यवहारों का अवलोकन एक साथ करते है अतः इस विधि को वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण विधि कहा जाता है।

गुण

(i) यह निष्पक्ष पद्धति है, इस विधि से प्राप्त परिणाम वैध होते हैं।

(ii) बहिःदर्शन विधि से प्राप्त परिणाम बहुत ही व्यापक और विश्वसनीय होते हैं।

(iii) यह विधि मितव्ययी व लचीली है।

दोष

(i) इस विधि के द्वारा अचेतन मन का अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

(ii) बहिःदर्शन विधि में दूसरे की मानसिक स्थिति को जानने के लिए पर्याप्त परीक्षण की आवश्यकता होती है।

(iii) इस विधि में अवलोकन कर्ता के पूर्वाग्रह कई बार परिणाम को प्रभावित कर देते हैं।

(iv) इस विधि में अवलोकनकर्ता अपने विचारों, भावों, अनुभूतियों को दूसरों पर थोपकर उसकी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

- अध्ययनकर्ता प्राणी के दोनों तरह के व्यवहारों का प्रेक्षण करते हैं –
  (i) आन्तरिक व्यवहार – हृदय धड़कन, रक्तचाप में परिवर्तन
  (ii) बाह्य व्यवहार – खेलना, दौडना, रोना, हँसना
- प्रेक्षण या निरीक्षण के मुख्यतः तीन प्रकार हैं–
  (i) सहभागी प्रेक्षण
  (ii) असहभागी प्रेक्षण
  (iii) स्वाभाविक प्रेक्षण (पशुओं के लिए उपयोगी होता है)
- बहिःदर्शन विधि को गैरेट ने बाल अध्ययन के लिए उपयोगी विधि बताया है।
  क्रो एण्ड क्रो – सतर्कता से नियंत्रित की गई दशाओं में भली भाँति प्रशिक्षित और अनुभवी मनोवैज्ञानिक या शिक्षक अपने निरीक्षण से छात्र के व्यवहार के बारे में बहुत कुछ जान सकता है।

2. प्रयोगात्मक विधि

- प्रतिपादक – विलियम वुण्ट द्वारा।
- प्रयोगात्मक विधि में वातावरण पर पूर्णतया नियंत्रण रखकर व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।
- प्रयोगात्मक विधि में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन पूर्व निर्धारित दशाओं में किया जाता है।
- प्रयोगात्मक विधि ने ही मनोविज्ञान को विज्ञान का दर्जा दिया है।

- प्रयोगात्मक विधि मूलतः जॉन स्टुअर्ट मिल द्वारा प्रतिपादित चर नियम पर आधारित है। मिल ने इसका वर्णन 1872 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक "Methods of Experimental Inquiry" में किया।
- व्यवहारों का अध्ययन चरों के माध्यम से किया जाता है।

  चर – चर ऐसी घटना, परिस्थिति, व्यक्ति का गुण होता है, जिसे मापा जा सकता है, यानी जो परिमाणात्मक रूप से परिवर्तित होता है। जैसे– उम्र, वृद्वि, थकान आदि।
- मनोवैज्ञानिक प्रयोग से तीन तरह के चर होते हैं–

  (i) स्वतंत्र चर

  (ii) आश्रित चर

  (iii) संगत चर

प्रयोगात्मक विधि के सोपान

1. समस्या से संबंधित पूर्व साहित्य की समीक्षा
2. समस्या का चुनाव व परिभाषीकरण
3. न्यायदर्श चयन, तथ्यों का संकलन
4. तथ्यों का वर्गीकरण व विश्लेषण
5. परिकल्पना का परीक्षण

गुण	दोष
1. इस विधि के परिणाम वैद्य व सार्वभौमिक होते हैं।	1. इस विधि से अचेतन मन का अध्ययन संभव नहीं है।
2. वैयक्तिक भिन्नता का अध्ययन किया जा सकता है।	2. इस विधि में व्यक्ति की मानसिक दशाओं पर नियंत्रण करना कठिन है।
3. यह वैज्ञानिक विधि है जिसके परिणाम सदैव वस्तुनिष्ठ होते है।	3. इसमें शिक्षा मनोविज्ञान जैसे वृहद् विषय के सभी पहलुओं का अध्ययन संभव नहीं है।
4. इस विधि में पुनरावृत्ति की सहायता से प्रयोग को बार–बार दोहराया जा सकता है।	4. प्रयोगात्मक विधि में धन व समय की अधिक आवश्यकता होती है।

3. व्यक्ति इतिहास विधि (Case Study)

- उपनाम – जीवन वृत विधि, जीवन इतिहास विधि, नैदानिक विधि।
- प्रतिपादक – टाइडमेन 1787 ई. में।
- इस विधि का प्रयोग मनोविज्ञान में बालक/व्यक्ति से संबंधित तथ्य एकत्रित करने के लिए किया जाता है। इसमें विशिष्ट या समस्याग्रस्त बालकों का अध्ययन किया जाता है।
- केस स्टडी विधि का उपयोग नैदानिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा व्यक्तियों के रोगात्मक लक्षणों की पहचान करके उसके कारणों का पता लगाने में किया जाता है।
- इसमे व्यक्ति के कुसमायोजन के कारण या विशिष्ट व्यवहार की खोज की जाती है।
- यह विधि बाल अपराधी, पागल, कुसमायोजित बालकों के लिए उपयोगी है।
- व्यक्ति इतिहास विधि में मनोवैज्ञानिक किसी एक व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए उसके जीवन के सभी तरह की घटनाओं जो उनके साथ घटित हुई का खाका तैयार किया जाता है।
- क्रो व क्रो– इस विधि का मुख्य ध्येय किसी समस्या का निदान करना है।

व्यक्ति इतिहास विधि के गुण

1. इस विधि से प्राप्त परिणाम वैद्य एवं विश्वसनीय होते हैं।
2. यह विधि नैदानिक अध्ययन में प्रयुक्त की जाती है।
3. इस विधि के द्वारा व्यक्ति की विकास संबंधी समस्याओं को विभिन्न अवस्थाओं पर विश्लेषित किया जा सकता है।

4. विकासात्मक विधि

- प्रतिपादक – जीन पियाजे द्वारा
- उपनाम – जेनेटिक विधि
- विकासात्मक विधि में बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व्यवहार का अध्ययन शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक विभिन्न अवस्थाओं में किया जाता है।
- विकासात्मक विधि को समकालीन एवं दीर्घकालीन अध्ययन प्रणाली के रूप में दो भागों में विभक्त किया गया है।

5. विभेदात्मक विधि

- प्रतिपादक – कैटल
- मनोविज्ञान यह मानता है कि कोई भी दो बालक एक समान नहीं होते हैं तथा इनके व्यवहार में भिन्नता पायी जाती हैं।
- विभेदात्मक विधि बालकों के क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, भावात्मक पक्षों का अध्ययन करती है।

6. तुलनात्मक विधि

- प्रतिपादक – अरस्तु
- इस विधि में समानताओं व विभिन्नताओं का संकलन करके परिणाम का निरूपण किया जाता है।

Unleash the topper in you

- इस विधि का प्रयोग पशुओं के व्यवहार को जानने के लिए किया जाता है।
- इस विधि में प्राणियों के व्यवहार से संबंधित असमानताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।

7. उपचारात्मक विधि

- व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा आचरण संबंधी जटिलताओं का अध्ययन कर उसके कारणों का पता लगाना निदानात्मक विधि है तथा उन्हें करने के उपाय उपचारात्मक विधि कहलाता है।
- इस विधि में यह जानने का प्रयास किया जाता है कि बालक की क्या आवश्यकताएँ है और वह असामान्य व्यवहार क्यों करता है।

8. समाजमिति विधि

- जनक – जे.एल. मोरेनो **[CTET-2013] [2nd grade 2016]**
- इस विधि में समूह के सदस्यों के मध्य अन्तः क्रिया एवं संरचनाओं का अध्ययन किया जाता है।
- जेनिंग्स ने 1946 ई. में इस विधि का नाम नोमेनेटिंग टेक्निक रखा।
- इस प्रणाली से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि समूह के सदस्य एक–दूसरे के प्रति क्या राय रखते है और किसी विषय–विशेष पर किसी व्यक्ति से कितने प्रभावित व अप्रभावित रहते हैं।
- शिक्षा मनोविज्ञान में इस विधि का प्रयोग अधिकतर पारस्परिक संबंधों, मनोबल मापन, व्यक्तित्व गुणों को जानने के लिए किया जाता है।
- इस विधि की सहायता से समूह में एकता लाने की संभावना को बल मिलता है।
- इस विधि में प्रश्नों से प्राप्त जानकारी के आधार पर समूह के प्रत्येक व्यक्ति को एक वृत्त में दर्शाया जाता है जिसे "Sociogram" कहा जाता है।

9. साक्षात्कार विधि

- साक्षात्कार एक उद्देश्यपूर्ण वार्तालाप है।
- जॉन बेस्ट – "साक्षात्कार एक मौखिक प्रश्नावली है। आमने–सामने बैठकर प्रयोगकर्ता द्वारा अपने प्रश्नों का जवाब प्राप्त करना साक्षात्कार कहलाता है।
- साक्षात्कार विधि दो प्रकार की होती हैं –
  - **(i) निर्देशित/संरचित साक्षात्कार**– इस साक्षात्कार में प्रश्न उनकी भाषा एवं क्रम पूर्व निश्चित होते है। इस विधि में कई व्यक्तियों का एक साथ तुलनात्मक परीक्षण किया जा सकता है।
  - **(ii) अनिर्देशित/असंरचित साक्षात्कार**– इसमें साक्षात्कार कर्ता बिना किसी नियम का पालन किये परिस्थिति के अनुसार प्रश्न पूछ सकता है।

10. प्रश्नावली विधि

- प्रतिपादक – वुडवर्थ
- इस विधि में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को संकलित करने के लिए प्रश्नों की सूची का निर्माण किया जाता है।

गुडे व हॉट के अनुसार– ''प्रश्नावली विधि में प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के लिए एक पत्रक का प्रयोग किया जाता है जिसे उत्तरदाता स्वयं भरकर वापस भेजता है।''

- प्रश्नों के आधार पर प्रश्नावली चार प्रकार की होती हैं –
  (i) बंद प्रश्नावली
  (ii) खुली प्रश्नावली
  (iii) चित्रित प्रश्नावली
  (iv) मिश्रित प्रश्नावली

(i) बंद प्रश्नावली– इस प्रश्नावली में प्रश्नों के आगे कुछ निश्चित विकल्प लिखे रहते हैं, व्यक्ति को दिये हुए समूह में ये हाँ/ना में उत्तर देने होते है।
जैसे– क्या तुम दुर्गापुरा में रहते हो ?

(ii) खुली प्रश्नावली – इस प्रश्नावली में सूचनादाता अपने विचार प्रकट करने के लिए स्वतंत्र होता है।
जैसे– इस चित्र के बारें में अपने मत प्रकट कीजिए।

(iii) चित्रित प्रश्नावली – इसमें व्यक्ति को चित्र देखकर उत्तर देने होते है।

(iv) मिश्रित प्रश्नावली – इस प्रश्नावली में उपर्युक्त तीनों प्रकार की प्रश्नावली का मिश्रण होता है।

11. मनोविश्लेषण विधि

- प्रतिपादक – सिग्मंड फ्रायड (वियना)
- मनोविश्लेषण विधि में अचेतन मन की अतृप्त इच्छाओं को जानने का प्रयास किया जाता है।

12. सहसंबंधात्मक विधि

- इस विधि का प्रयोग दो श्रेणी के कारको में सह संबंध जानने के लिए किया जाता है।
- सहसंबंध गुणांको को सांख्यिकीय सूत्र से ज्ञात किया जाता है। यह गुणांक हमेशा +1.00 से -1.00 के मध्य रहता है।
- शिक्षा मनोविज्ञान में सहसंबंधात्मक विधि का प्रयोग अधिकतर शैक्षिक उपलब्धियों के साथ भाषा कौशल आदि के संबंध ज्ञात करने के लिए किया जाता है।

13. **सांख्यिकी विधि**
   - इस विधि का शिक्षा और मनोविज्ञान में इसका प्रयोग किसी समस्या या परीक्षण से संबंधित तथ्यों का संकलन और विश्लेषण करके कुछ परिणाम निकालने के लिए किया जाता है।
   - इस विधि में प्राप्त परिणाम की विश्वसनीयता इस बात पर निर्भर करती है कि तथ्यों के संकलन में कितनी सावधानी बरती गई।

14. **परीक्षण विधि**
   - परीक्षण विधि में व्यक्तियों की विभिन्न योग्यताओं को जानने के लिए परीक्षण किया जाता है।
   - यह वर्तमान में विद्यालय स्तर पर सर्वाधिक उपयुक्त विधि है।
   - परीक्षण सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं– (1) व्यक्तिगत् परीक्षण (2) सामूहिक परीक्षण

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

1. व्यक्तिगत् भिन्नता को समझने में सहायक।
2. निर्देशन एवं परामर्श में सहायक।
3. अनुशासन एवं चरित्र निर्माण में उपयोगी।
4. बाल–केन्द्रित शिक्षा को बढ़ावा।
5. समय–सारणी निर्माण में उपयोगी।
6. उचित शिक्षण विधियों का ज्ञान।
7. पाठ्यक्रम निर्माण में सुधार।
8. मूल्यांकन में नवीन विधियों का प्रयोग।
9. अध्यापक की स्वयं की परख।
10. मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं अनुसंधान।

शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन की उपयोगिता

- शिक्षा मनोविज्ञान विधायक तथा व्यावहारिक विषय होने के कारण व्यक्ति तथा समाज दोनों के लिए उपयोगी है।
- आज के युग में एक दूसरे को बेहतर तरीके से समझने के लिए मनोविज्ञान का अध्ययन आवश्यक सा हो गया है।

  कुप्पु स्वामी– मनोविज्ञान, शिक्षक को अनेक धारणाएँ और सिद्धांत प्रदान करके उसकी उन्नति में योगदान देता है।

  जॉन्स ब्लेयर– मनोवैज्ञानिक निरूपण की विधियों में अप्रशिक्षित कोई भी व्यक्ति संभवतः उन कार्यों और कर्त्तव्यों का पालन नहीं कर सकता है, जिनका उत्तरदायित्व शिक्षकों पर है।

  कोलसेनिक– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक को यह निर्णय करनें में सहायता दे सकता है कि वह विशिष्ट परिस्थितियों में अपनी विशिष्ट समस्याओं का समाधान कैसे करें।

  जोड़– शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के वश की बात नहीं यह कला है।

  पील– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है।

- मनोविज्ञान सीखने की परिस्थिति का मनोवैज्ञानिक विधियों से विश्लेषण करता है जो बालकों के लिए उपयोगी है।
- जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं को दूर करने में मनोविज्ञान व्यक्ति की सहायता करता है।
- मानसिक स्वास्थ्य के उत्तम समायोजन में मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है।
- मनोविज्ञान मन की शक्तियों की जानकारी प्राप्त कर ध्यान, अधिगम, प्रत्यक्षीकरण, जिज्ञासा आदि तत्वों को समझता है।
- व्यक्ति को आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिए मनोविज्ञान का अध्ययन आवश्यक है।
- मनोविज्ञान उचित शिक्षण विधियों के प्रयोग में सहायक है।
- बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास में मनोविज्ञान अहम योगदान देता है।
- यह अनुशासन व उपयोगी पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक है।
- बाल स्वभाव व व्यवहार का ज्ञान देने में उपयोगी है।
- मनोविज्ञान बालक की आवश्यकता का ज्ञान व व्यक्तिगत विभिन्नता को जानने में मदद करता है।

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य

1. "Psychology" (साइकोलॉजी) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक या लेटिन भाषा से हुई है।

   नोट– (ग्रीक व लेटिन दोनों विकल्प होनें पर पहले ग्रीक मानें, ग्रीक ना होने पर लेटिन उत्तर मानें)
2. "Psychology" शब्द Psyche+Logos से मिलकर बना है।
3. मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान माननें वाले मनोवैज्ञानिक वाटसन है।
4. आधुनिक शिक्षा का संबंध व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण से हैं – **फ्रेन्डसन।**
5. स्वतंत्र विषय के रूप में मनोविज्ञान की सबसे पहली परिभाषा आत्मा का विज्ञान, फिर मन/मस्तिष्क का विज्ञान, फिर चेतना का विज्ञान, फिर व्यवहार के विज्ञान रूप में दी गई।
6. शिक्षा शब्द का प्रयोग उन सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जो एक व्यक्ति में उसके जीवन काल में होते है– **डगलस एवं हॉलैण्ड़**
7. "Wisdom Of The Overself" पुस्तक के लेखक **पॉल ब्रन्टन** है।

8. मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा को खोया, फिर अपने मन को त्यागा, इसके बाद अपनी चेतना को खोई और अब यह व्यवहार को स्वीकार करता है – **वुडवर्थ।**
9. प्रयोजनवाद संप्रदाय के जनक विलियम मैक्डूगल हैं।
10. मनोविज्ञान के ज्ञान के प्रचलित होने के कारण ही शिक्षण विधियों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है – **रायबर्न।**
11. परम अहम (Super Igo) का संबंध नैतिकता से है।
12. समाज शास्त्रीय संप्रदाय के प्रवर्तक एरिक फ्रोम, करेन हॉर्नी व सुलीवान है।
13. मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है – **पिल्सबरी।**
14. मनोविज्ञान की प्रथम प्रयोगशाला की स्थापना विलियम वुण्ट ने 1879 ई. में जर्मनी के लिपजिंग शहर में की थी।
15. अन्तर्दर्शन विधि संरचनावाद संप्रदाय की देन है।
16. "शिक्षक को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जितना अधिक ज्ञान होता है, उतना ही अधिक वह जानता है कि कैसे पढ़ाया जाये"– **माण्टेसरी।**
17. समाजमिति विधि के प्रतिपादक जे.एल. मेरेनो है।
18. शिक्षा मनोविज्ञान में बालक की विशेष योग्यताओं, वंशानुक्रम और वातावरण तथा व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है।
19. सांख्यिकी विधि में गणितीय सूत्रों व गणनाओं का प्रयोग अधिक किया जाता है।
20. स्कीनर शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध पढ़ाने व सीखने से मानते है।
21. मैक्डूगल ने बताया कि "मूल प्रवृत्तियाँ संपूर्ण मानव व्यवहार की चालक है''।
22. "मनोविज्ञान, शिक्षक को अनेक धारणाएँ और सिद्धांत प्रदान करके उसकी उन्नति में योग देता है''। – **कुप्पू स्वामी।**
23. आत्म निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की परम्परागत विधि है।
24. स्कीनर ने कहा है कि "गाथा वर्णन विधि की आत्मनिष्ठता के कारण उसके परिणाम पर विश्वास नहीं किया जा सकता है"।
25. "शिक्षको को अपने शिक्षण में उन मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जो सफल शिक्षण और प्रभावशाली अधिगम के लिए अनिवार्य है"– **एलिस क्रो।**
26. आइजनेक ने बताया कि मनोभौतिकी का संबंध जीवित प्राणियों की उस अनुक्रिया से है जो जीव पर्यावरण की ऊर्जात्मक पूर्णता के प्रति करता है।
27. 1879 में विलियम वुण्ट ने लिपजिंग, जर्मनी में प्रथम मनोविज्ञान प्रयोगशाला को स्थापित किया।
[CTET, REET]
28. 1890 में विलियम जेम्स ने "प्रिंसिपल ऑफ साइकोलॉजी" प्रकाशित की।
29. 1895 में मनोविज्ञान की एक व्यवस्था के रूप में प्रकार्यवाद की स्थापना।
30. 1900 में सिगमंड फ्रायड ने मनोविश्लेषणवाद का विकास करना।
31. 1904 में इवान पावलॉव को नोबल पुरस्कार पाचन व्यवस्था के कार्य के लिए मिला जिससे अनुक्रियाओं के विकास के सिद्धांत को समझा जा सका।
32. 1905 में बीने एवं साइमन द्वारा बुद्धि परीक्षण का विकास करना।
33. 1912 में जर्मनी में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का उदय हुआ।
34. 1916 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रथम विभाग खुला।
35. 1922 में मनोविज्ञान को इण्डियन साइंस कांग्रेस एसोसिएशन में सम्मिलित किया गया।
36. 1924 भारतीय मनोवैज्ञानिक एसोसिएशन की स्थापना हुई।
37. 1924 में जॉन बी. वाटसन ने व्यवहारवाद पुस्तक लिखी जिससे व्यवहार की नींव पडी।
38. 1928 में एन.एन. सेनगुप्ता एवं राधाकमल मुखर्जी ने सामाजिक मनोविज्ञान की प्रथम पुस्तक लिखी (लंदनः एलन और अनविन)।
39. 1949 में डिफेंस साइंस ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया में मनोवैज्ञानिक शोध खण्ड की स्थापना हुई।
40. 1951 में मानववादी मनोवैज्ञानिक कार्ल रोजर्स ने रोगी–केन्द्रित चिकित्सा प्रकाशित की।
41. 1953 में बी. एफ स्किनर ने "साइंस एंड ह्यूमन बिहेविअर" प्रकाशित की जिससे व्यवहारवाद को मनोविज्ञान के एक प्रमुख उपागम के रूप में बढ़ावा मिला।
42. 1954 में मानववादी मनोवैज्ञानिक अब्राहम मैस्लो ने "मोटिवेशन एंड पर्सनॉलटी" (NIMHANS) प्रकाशित की।
43. 1954 में इलाहाबाद में मनोविज्ञानशाला की स्थापना हुई।
44. 1955 में बैंगलोर में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसांइसेस की स्थापना।
45. 1962 में राँची में हॉस्पिटल फॉर मेंटल डिजीजिज की स्थापना।
46. 1973 में कोनराड लॉरेंज तथा निको टिनबर्गेन को उनके कार्य पशु व्यवहार की उपजाति विशिष्टता की अंतर्निर्मित शैली जो बिना किसी पूर्व अनुभव अथवा अधिगम के होती है, पर नोबल पुरस्कार मिला।
47. 1978 में निर्णयन पर किए गए कार्य के लिए हर्बर्ट साइमन को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।
48. 1981 में डेविड ह्यूबल एवं टॉरस्टेन वीसल को मस्तिष्क की दृष्टि कोशिकाओं पर शोध के लिए नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

49. 1981 में रोजर स्पेरी को मस्तिष्क विच्छेद अनुसंधान के लिए नोबल पुरस्कार मिला।
50. 1989 में नेशनल एकेडमी ऑफ साइकोलॉजी (NAOP) इंडिया की स्थापना हुई।
51. 1997 में गुड़गाँव, हरियाणा में नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर (NBRC) की स्थापना हुई।
52. 2002 में अनिश्चितता में मानव निर्णयन के अनुसंधान पर डेनियल कहनेमन को नोबल पुरस्कार मिला।
53. 2005 में आर्थिक व्यवहार में सहयोग एवं द्वंद्व की समझ में खेल सिद्धांत के अनुप्रयोग के लिए थॉमस शेलिंग को नोबल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER बाल विकास का अधिगम या सीखने से संबंध

अधिगम या सीखना

अधिगम या सीखना एक बहुत ही सामान्य और आम प्रचलित प्रक्रिया है। जन्म के तुरन्त बाद से ही व्यक्ति सीखना प्रारम्भ कर देता है और फिर जीवनपर्यन्त कुछ ना कुछ सीखता ही रहता है।

सामान्य अर्थ में 'सीखना' व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है। परन्तु सभी तरह के व्यवहार में हुए परिवर्तन को सीखना या अधिगम नहीं कहा जा सकता ।

वुडवर्थ के अनुसार, "नवीन ज्ञान और नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया, सीखने की प्रक्रिया है। "

गेट्स एवं अन्य के अनुसार, "अनुभव और प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन लाना ही अधिगम या सीखना है।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार, "सीखना या अधिगम आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

क्रॉनवेक के अनुसार, "सीखना या अधिगम अनुभव के परिणाम स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन द्वारा व्यक्त होता है।"

मॉर्गन और गिलीलैण्ड के अनुसार, "अधिगम या सीखना, अनुभव के परिणाम स्वरूप प्राणी के व्यवहार में कुछ परिमार्जन है, जो कम से कम कुछ समय के लिए प्राणी द्वारा धारण किया जाता है।"

अधिगम या सीखने की विशेषताएँ

- **सीखना : सम्पूर्ण जीवन चलता हैं।**
- **सीखना : परिवर्तन का एक रूप हैं -** व्यक्ति स्वयं और दूसरे के अनुभव से सीख कर अपने व्यवहार, विचारों, इच्छाओं, भावनाओं आदि मे परिवर्तन करता हैं।
- **सीखना : सार्वभौमिक हैं -** सीखने का गुण सिफर मनुष्य मे नहीं पाया जाता हैं वरन संसार के समस्त जीवधारियों मे यह गुण विद्यमान होता हैं ।
- **सीखना : सक्रिय हैं -** सक्रिय रूप से सीखना वास्तविक रूप से सीखना हैं । बालक तभी कुछ सीख सकता हैं, जब वह स्वयं सीखने की प्रक्रिया मे भाग लेता हैं।
- **सीखना : उद्देश्यपूर्ण हैं -** सीखना, उद्देश्यपूर्ण होता हैं, उद्देश्य जितना अधिक प्रबल होगा, सीखने की प्रक्रिया उतनी ही तीव्र गति से होगी ।
- **सीखना : विवेकपूर्ण हैं -** मर्सेल का कथन हैं कि सीखना, यांत्रिक कार्य के बजाय विवेकपूर्ण कार्य कार्य हैं। किसी कार्य को शीघ्रता और सरलता से सीखा जा सकता हैं जिसमे बुद्धि या विवेक का प्रयोग किया जाता हैं।
- **सीखना : अनुभवों का संगठन है -** सीखना न तो नए अनुभव की प्राप्ति हैं और न पुराने अनुभवों का योग, वरन यह नए और पुराने अनुभवों का संगठन हैं।
- **सीखना : विकास हैं -** व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं और अनुभवों द्वारा कुछ न कुछ सीखता हैं, और इससे उस व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास होता हैं।
- **सीखना : नया कार्य करना हैं -** वुडवर्थ के अनुसार - सीखना कोई नया कार्य करना हैं पर उसने उसमे एक शर्त लगा दी हैं उसका कहना हैं कि सीखना, नया कार्य करना तभी हैं, जबकि यह कार्य फिर किया जाए और दूसरे कार्यों मे प्रकट हो।
- **सीखना : अनुकूलन हैं -** सीखना, वातावरण से अनुकूलन करने के लिए आवश्यक हैं । सीखकर ही व्यक्ति, नई परिस्थितियों से अपना अनुकूलन कर सकता हैं । जब वह अपने व्यवहार को इनके अनुकूल बना लेता हैं, तभी वह कुछ सीख पाता हैं ।

अधिगम और विकास मे संबंध

अधिगम और विकास एक दूसरे के पुरक माने जाते हैं । अधिगम के बिना विकास असंभव हैं । दोनों कारकों मे अंतर संबंध का पाया जाना उसी प्रकार संभव हैं जैसे एक ही सिक्के के दो पहलू - अलग दिखते हुए भी एक ही सिक्के का हिस्सा हैं।। इनमे निम्नलिखित प्रकार के अंतर - संबंध पाए जाते हैं -

- **अधिगम मे विवरण :** प्रत्येक मानव प्राणी में अधिगम करने की एक सामान्य क्षमता होती है, लेकिन यह क्षमता हर व्यक्ति में समान नहीं होती। इस अधिगम क्षमता में अन्तर का कारण वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं, जैसे व्यक्तित्व, रुचि, अभिवृत्ति, और व्यवहार के विभिन्न प्रतिमान। इसलिए, विभिन्न व्यक्तियों में अधिगम की प्रक्रिया और परिणाम में भिन्नता देखी जाती है। उदाहरण के लिए, एक छात्र गणित में जल्दी महारत हासिल कर सकता है, जबकि दूसरा छात्र भाषा में अधिक बेहतर होता है। यह अन्तर केवल परिपक्वता का फल नहीं है, बल्कि यह विकास और अधिगम दोनों का संयुक्त परिणाम होता है। कुछ योग्यताएँ जन्मजात होती हैं, अतः एक ही अधिगम के अवसर के बावजूद भी व्यक्तियों में अधिगम की मात्रा और गति अलग-अलग हो सकती है।
- **विकास की सीमाएँ :** विकास की एक निश्चित सीमा होती है, जिसके अनुसार ही प्रशिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया निर्धारित की जानी चाहिए। यदि अधिगम की व्यवस्था व्यक्ति के विकास स्तर को ध्यान में रखकर की जाए, तो अच्छे और सफल परिणाम की उम्मीद की जा सकती है, अन्यथा अधिगम अधूरा या कम प्रभावी रह जाएगा। कैटेल और उनके सहकर्मियों ने इस बात को स्पष्ट किया है कि किसी भी प्रकार का अधिगम और समायोजन प्राणी की अंतर्निहित गुणों द्वारा सीमित होता है। उदाहरण के लिए, एक शिशु को जटिल गणितीय संकल्पनाएँ नहीं सिखाई जा सकतीं क्योंकि उसकी मानसिक परिपक्वता अभी इस स्तर तक नहीं पहुँची होती। गेसेल ने भी कहा कि पर्यावरणीय कारक विकास में सहायता कर सकते हैं, उसे गति दे सकते हैं और सुधार कर सकते हैं, पर वे विकास की मूल श्रृंखला को उत्पन्न नहीं कर सकते। कारमाइकल एवं मैकग्रा के अनुसार परिपक्वता (Maturity) और अधिगम (Learning) दोनों विकास (Development) के पूरक हैं, अर्थात् विकास की प्रक्रिया इन्हीं दोनों कारकों के सम्मिलन से निर्धारित होती है। इसे सूत्र रूप में व्यक्त किया गया है: $D = f(M \times L)$, जहाँ D विकास, M परिपक्वता, और L अधिगम को दर्शाता है।
- **अधिगम की समय सारणी :** विकास और अधिगम के बीच एक महत्वपूर्ण अन्तर यह भी है कि विकास के आधार पर अधिगम के लिए **समय सारणी** निर्धारित की जा सकती है। इसका अर्थ यह है कि व्यक्ति तभी अधिगम कर सकता है जब वह उस सीखने के लिए तैयार या तत्पर हो। अधिगम के लिए तत्परता का निर्धारण विकासात्मक तत्परता के माध्यम से किया जाता है, जो यह संकेत देती है कि कब अधिगम करना संभव और उचित होगा। यदि व्यक्ति अधिगम के लिए तैयार नहीं होता, तो उस समय अधिगम कराने का प्रयास सफल नहीं होता। हरलॉक ने भी कहा है, "व्यक्ति तब तक अधिगम नहीं कर सकता जब तक वह अधिगम के लिए तैयार न हो। विकासात्मक तत्परता यह निर्धारित करती है कि कब अधिगम होना चाहिए और कब नहीं।"

- **उद्दीपन की आवश्यकता :** मानव जीवन में जो आनुवंशिक विशेषताएँ निहित होती हैं, उनका विकास केवल तभी संभव होता है जब सामाजिक अधिगम और उचित उद्दीपन उपलब्ध हों। यदि बालक को अधिगम के पर्याप्त अवसर और उद्दीपन प्रदान न किए जाएँ, तो उसकी विकास की गति अवरुद्ध हो सकती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बच्चा उपयुक्त शिक्षा, सामाजिक संपर्क, और प्रोत्साहन से वंचित रह जाता है, तो उसकी मानसिक और शारीरिक क्षमताओं का विकास प्रभावित होगा। अधिगम की प्रक्रिया के दौरान उत्तेजनाएँ (stimulation) बालक को सीखने के लिए प्रेरित करती हैं और उन्हें अधिक सक्षम बनाती हैं। इस प्रकार उद्दीपन का अभाव आनुवंशिक क्षमताओं को पूरी तरह विकसित होने से रोक सकता है, जिससे बालक की समग्र विकास क्षमता सीमित हो जाती है।